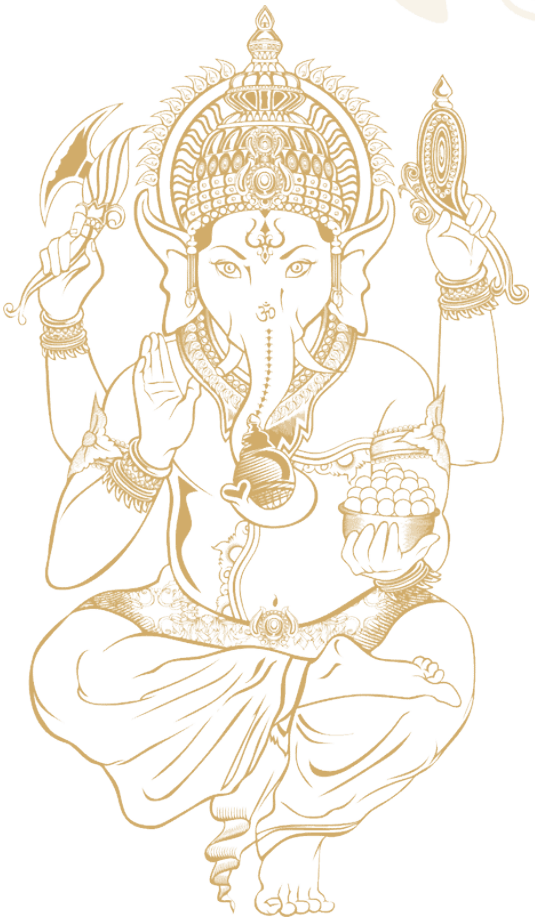

Dikshant

Ms. Sakshi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119614308

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
15-16/10/1997	जन्म तिथि	22-23/11/1998
बुध-गुरुवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 04:10:00	जन्म समय	02:17:00 घंटे
घटी 54:36:52	जन्म समय(घटी)	48:49:25 घटी
India	देश	India
Mathura	स्थान	Aligarh
27:30:00 उत्तर	अक्षांश	27:54:00 उत्तर
77:42:00 पूर्व	रेखांश	78:04:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:12	स्थानिक संस्कार	-00:17:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:19:15	सूर्योदय	06:44:30
17:50:29	सूर्यास्त	17:23:03
23:49:29	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:19

विंशोत्तरी बुध 5वर्ष 4मा 7दि		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी शुक्र 13वर्ष 9मा 30दि	
शुक्र		29:14:13	सिंह	लग्न	कन्या	07:26:42	चन्द्र	
22/02/2010		28:47:00	कन्या	सूर्य	वृश्चि	06:30:26	**22/09/2018**	
22/02/2030		25:48:05	मीन	चंद्र	धनु	17:26:42	**22/09/2028**	
शुक्र	23/06/2013	18:15:46	वृश्चि	मंगल	कन्या	03:35:24	चन्द्र	24/07/2019
सूर्य	23/06/2014	00:14:38	तुला	बुध व	वृश्चि	23:33:50	मंगल	22/02/2020
चन्द्र	22/02/2016	18:22:02	मक	गुरु	कुंभ	24:28:22	राहु	23/08/2021
मंगल	23/04/2017	14:35:02	वृश्चि	शुक्र	वृश्चि	12:25:23	गुरु	23/12/2022
राहु	23/04/2020	22:37:45	मीन व	शनि व	मेष	04:06:51	शनि	23/07/2024
गुरु	23/12/2022	25:37:23	सिंह व	राहु व	सिंह	02:12:45	बुध	23/12/2025
शनि	22/02/2026	25:37:23	कुंभ व	केतु व	कुंभ	02:12:45	केतु	24/07/2026
बुध	23/12/2028	10:54:46	मक	हर्ष	मक	15:29:13	शुक्र	23/03/2028
केतु	22/02/2030	03:22:06	मक	नेप	मक	06:02:15	सूर्य	22/09/2028
		10:04:31	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	13:47:19		

लग्न-चलित

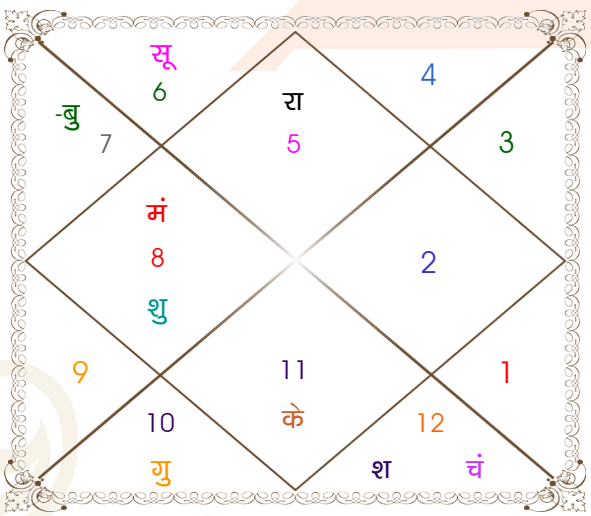

लग्न-चलित

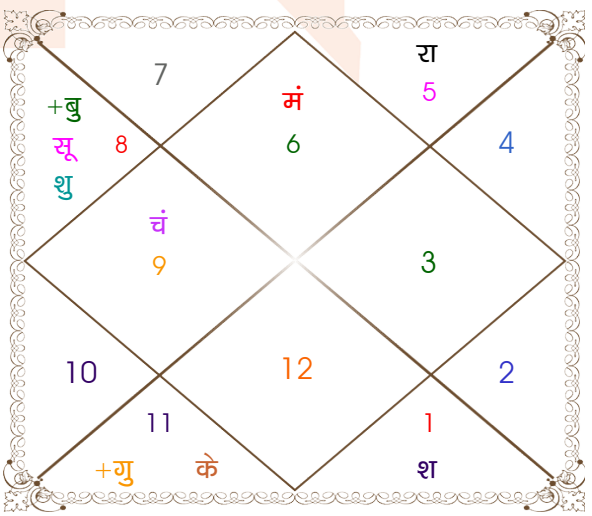

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	31.50		

क्पोंदज का वर्ग सिंह है तथा डेण्ैीप का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्पोंदज और डेण्ैीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

क्पोंदज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल क्पोंदज कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल क्पोंदज कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्ैीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु क्पोंदज कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

क्पोंदज तथा डेण्ैीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।